12 Pages (4+)

एम.एच.डी.

एम.ए. हिंदी कार्यक्रम

द्वितीय वर्ष के सत्रीय कार्य
(जुलाई 2013 एवं जनवरी 2014 सत्रों के लिए)

एम.एच.डी-1 : हिंदी काव्य-1
एम.एच.डी-5 : साहित्य सिद्धांत और समालोचना
एम.एच.डी-7 : हिंदी भाषा और भाषाविज्ञान
एम.एच.डी-13 : उपन्यास : स्वरूप और विकास
एम.एच.डी-14 : हिंदी उपन्यास-1 (प्रेमचंद का विशेष अध्ययन)
एम.एच.डी-15 : हिंदी उपन्यास-2
एम.एच.डी-16 : भारतीय उपन्यास

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली-110 068

सत्रीय कार्य-2013-14

कार्यक्रम कोड : एम.एच.डी.

प्रिय छात्र/छात्राओ,

यह एम.ए. हिंदी द्वितीय वर्ष के सत्रीय कार्यों की पुस्तिका है। इसमें निम्नलिखित सातों पाठ्यक्रमों के सत्रीय कार्य हैं :

एम.एच.डी.-1 : हिंदी काव्य-1
एम.एच.डी.-5 : साहित्य सिद्धांत और समालोचना
एम.एच.डी.-7 : हिंदी भाषा और भाषाविज्ञान
एम.एच.डी.-13 : उपन्यास : स्वरूप और विकास
एम.एच.डी.-14 : हिंदी उपन्यास-I (प्रेमचंद का विशेष अध्ययन)
एम.एच.डी.-15 : हिंदी उपन्यास-II
एम.एच.डी.-16 : भारतीय उपन्यास

एच.एच.डी.-5 पाठ्यक्रम 8 क्रेडिट का है। शेष सभी पाठ्यक्रम 4-4 क्रेडिट के हैं। प्रत्येक पाठ्यकम के लिए आपको एक-एक सत्रीय कार्य करना होगा। प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएँगे।

एम.ए. कार्यक्रम में अध्ययन के लिए आपको कई खंडों में पाठ्य सामग्री भेजी गई है। साथ ही पाठ्यक्रमों में अतिरिक्त अध्ययन के लिए "विवेचना" नाम से आलोचनात्मक आलेखों के संग्रह भेजे गए हैं। एम.एच.डी-1 में "विविधा" नामक पुस्तक भी भेजी गई है।

एम.ए. स्तर पर परीक्षा के सवाल केवल पाठ्य पुस्तकों तक सीमित नहीं होते। अतः छात्रों से यह भी अपेक्षा की जाती है कि वे उपलब्ध कराई गई सामग्री के अतिरिक्त पुस्तकालयों से अन्य पुस्तकों और पत्रिकाओं का भी अध्ययन करें, जिससे ज्ञान में वृद्धि हो।

उद्देश्य : सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्यक्रम से संबंधित सामग्री को कितना पढ़ा-समझा है और उसका विवेचन-विश्लेषण और मूल्यांकन करने की क्षमता कितनी अर्जित की है। सत्रीय कार्यों का उद्देश्य यह भी है कि पाठ्य सामग्री के अध्ययन के पश्चात् आप उसके संबंध में स्वयं अपना दृष्टिकोण विकसित कर सकें और उन्हें अपने शब्दों में लिख सकें। इसका तात्पर्य यह है कि विश्वविद्यालय द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री को आप पुनर्प्रस्तुत न करें बल्कि पूछे गए प्रश्नों का उत्तर सोच-विचारकर अपने शब्दों में लिखें। आपके उत्तर में आपका अध्ययन, आलोचनात्मक दृष्टि, रचनाओं के बारे में आपकी अपनी समझ और भाषा पर आपका अधिकार व्यक्त होना चाहिए। आपके सत्रीय कार्य का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक इन सभी बातों को ध्यान में रखेंगे।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरंभ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1. एम.ए. हिंदी के पाठ्यक्रमों के लिए कार्यक्रम दर्शिका में दिए हुए निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए।
2. अपनी उत्तर पुस्तिका के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अपना अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।
3. अपनी उत्तर पुस्तिकाओं की बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य कोड और उस अध्ययन केंद्र का नाम/कोड लिखिए जिससे आप संबद्ध हैं।

उत्तर पुस्तिका का प्रथम पृष्ठ निम्न प्रकार से शुरू होगा :

	अनुक्रमांक : ....
	नाम : ....
	पता : ....
पाठ्यक्रम का नाम/कोड :	....
सत्रीय कार्य कोड :	....
अध्ययन केंद्र का नाम/कोड :	दिनांक : ....

4. उत्तर के लिए केवल फुलस्केप के आकार के कागज का इस्तेमाल करें और उन कागजों को अच्छी तरह से बाँध लें।

5. प्रत्येक उत्तर से पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

6. अपनी ही लिखावट में उत्तर दें।

7. सत्रीय कार्य की उत्तर पुस्तिका जाँच के लिए अपने अध्ययन केंद्र के संचालक के पास **जुलाई 2013 सत्र के लिए 31 मार्च 2014 एवं जनवरी 2014 सत्र के लिए 30 सितंबर 2014** तक अवश्य जमा करा दें।

प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन करें :

1. आपकी सत्रांत परीक्षा तीन घंटे की होगी और प्रत्येक सत्रीय कार्य भी तीन घंटे में किए जा सकने की दृष्टि से तैयार किए गए हैं। इसलिए सत्रीय कार्य में दिए गए प्रश्नों का उत्तर लिखते हुए इस बात का ध्यान रखें कि सभी प्रश्नों के उत्तर तीन घंटे में लिखे जा सकें।

2. प्रश्नों में जो पूछा गया है, उसको अच्छी तरह समझ कर उत्तर लिखें। जो नहीं पूछा गया है, उसे न लिखें। जितना पूछा गया है, उतना ही लिखें। आपका उत्तर सुसंगत, सुबोधगम्य और स्पष्ट हो।

3. व्याख्या से संबंधित अंशों में, संदर्भ, प्रसंग, व्याख्या और भाषा, शैली या अन्य किसी विशेष बात का उल्लेख करें। इन सभी पहलुओं के लिए अंक निर्धारित होते हैं।

4. अपने पास सत्रीय कार्य के उत्तर की प्रति अवश्य रखें।

शुभकामनाओं के साथ!

नोटः याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है। अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

एम.एच.डी-1 : हिंदी काव्य-1 (आदि काव्य, भक्ति काव्य एवं रीति काव्य)
सत्रीय कार्य

सत्रीय कार्य कोड : एम-एच-डी-1/टी-एम-ए/2013-14
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित काव्यांशों की लगभग 200 शब्दों में सप्रसंग व्याख्या कीजिए: **10×4=40**

क) जाग पियारी अब का सोवै।
रैन गई दिन काहे को खोवै।।
जिन जागा तिन मानिक पाया।
तैं बौरी सब सोय गँवाया।।
पिय तेरे चतुर तू मूरख नारी।
कबहुँ न पिय की सेज सँवारी।।
तै बौरी बौरापन कीन्ही।
भर–जोवन पिय अपन न चीन्ही।।
जाग देख पिय सेज न तेरे।
तहि छाँड़ि उठि गये सवेरे।।
कहै कबीर सोई धुन जागै।
शब्द–बान उर–अंतर लागै।।

ख) खरभरू देखि बिकल पुर नारीं । सब मिलि देहिं महीपन्ह गारीं।।
तेहिं अवसर सुनि सिव धनु भंगा। आयउ भृगुकुल कमल पतंगा।।
देखि महीप सकल सकुचाने । बाज झपट जनु लवा लुकाने।।
गौरि सरीर भूति भल भ्राजा । भाल बिसाल त्रिपुंड बिराजा।।
सीस जटा ससिबदनु सुहावा। रिसबस कछुक अरुन होइ आवा।।
भृकुटी कुटिल नयन रिस राते । सहजहुं चितवत मनहुँ रिसाते।।
बृषभ कंध उर बाहु बिसाला । चारू जनेउ माल मृगछाला।।
कटि मुनिबसन तून दुह बाँधे। धनु सर कर कुठारू कल काँधें।।

ग) म्हाँ गिरधर आगाँ, आगाँ नाच्यारी।।
णाच णाच म्हाँ रसिक रिझावाँ प्रीत पुरातन जाँच्या री।
स्याम प्रीत री बाँध घुँघर्‌याँ मोहण म्हारो साँच्यारी।
लोक लाज कुलरा मरजादाँ जगमां णेक णा राख्यौरी।
प्रीतम पल छण णा बिराराावाँ मीरा हरि रँग राच्याँरी।।

घ) लाल, तुम्हारे बिरह की अगनि अनूप अपार।
सरसै बरसैं नीर हूँ, झर हू मिटै न झार।।

मकराकृति गोपाल कैं सोहत कुंडल कान।
धरयौ मनौ हिय धर समरू, डयौढ़ी लसत निसान।।

2. निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए: **15 x 3 = 45**

क) विद्यापति के काव्य की विशेषताएँ बताइए।
ख) मलिक मुहम्मद जायसी कृत पद्‌मावत के नागमति वियोग खंड के कथ्य और मर्म का विवेचन कीजिए।
ग) सूरदास के भ्रमरगीत में सुगण–निर्गुण विवाद को किस प्रकार वर्णित किया गया है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

3. निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिए: **5 x 3 = 15**

क) पृथ्वीराज रासों में वर्णित श्रृंगार पक्ष की विवेचना कीजिए।
ख) तुलसीदास कृत रामचरित मानस के 'परशुराम–लक्ष्मण संवाद' की विशेषताएँ बताइए।
ग) बिहारी रचित मुक्तक काव्य की विशेषताओं पर संक्षेप में विचार कीजिए।

(एम.एच.डी.-05) : साहित्य सिद्धांत और समालोचना

एम.एच.डी.-5, एम.ए. हिंदी के द्वितीय वर्ष का अनिवार्य पाठ्यक्रम है। "साहित्य सिद्धांत और समालोचना" शीर्षक इस पाठ्यक्रम में आपने प्राचीन भारतीय साहित्य-चिंतन, और हिंदी आलोचना का अध्ययन किया है। इस पाठ्यक्रम में आपको एक सत्रीय कार्य करना है। यह सत्रीय कार्य पूरे पाठ्यक्रम पर आधारित है।

इस सत्रीय कार्य में आपको कुल दस प्रश्न करने हैं– नौ निबंधात्मक प्रश्न तथा एक टिप्पणीपरक प्रश्न। टिप्पणीपरक प्रश्न में आपको दो विषयों पर टिप्पणियाँ लिखनी हैं। आपकी सत्रांत परीक्षा का ढाँचा भी कुछ हद तक इसी प्रकार का होगा। फर्क केवल इतना है कि यहाँ सभी प्रश्न अनिवार्य हैं, जबकि सत्रांत परीक्षा में आपके पास विकल्प होगा, यानी कि आपको दस प्रश्नों में पाँच का उत्तर देना होगा।

सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.-05
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.-05/एएसटी/(टी.एम.ए)/2013-2014

कुल अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. संस्कृत काव्यशास्त्र में काव्य हेतु के संदर्भ में प्रतिभा, व्युत्पत्ति और अभ्यास की चर्चा का उल्लेख करते हुए प्रतिभा और कल्पना के साम्य-वैषम्य पर प्रकाश डालिए। 10
2. भारतीय काव्य शास्त्र के प्रमुख सम्प्रदायों का परिचय दीजिए। 10
3. साधारणीकरण से तात्पर्य स्पष्ट करते हुए उसके महत्व का प्रतिपादन कीजिए। 10
4. रस की परिभाषा और स्वरूप का उल्लेख करते हुए बताइए कि करुण रस किस प्रकार आस्वाद्य है। 10
5. 'विरेचन' से अरस्तू का क्या तात्पर्य है? विरेचन संबंधी विभिन्न व्याख्याओं का विवरण देते हुए बताइए कि इनमें से कौन-सी व्याख्या सर्वाधिक संगत मानी जा सकती है। 10
6. उदात्त के विषय में लौंजाइनस के प्रमुख विचारों का प्रतिपादन कीजिए। 10
7. एलियट की परम्परा और प्रज्ञा संबंधी अवधारणा पर प्रकाश डालिए। 10
8. काव्यभाषा के संबंध में वड्सवर्थ की अवधारणा का उल्लेख करते हुए बताइए कि उनकी किस प्रकार आलोचना की गई। 10
9. मनोविश्लेषणवादी आलोचना की मूल स्थापनाओं पर विचार कीजिए। 10
10. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए : 5+5=10

    (क) शुक्लोत्तर हिन्दी आलोचना

    (ख) उत्तर आधुनिकता

एम.एच.डी.–7 : हिन्दी भाषा और भाषाविज्ञान

सत्रीय कार्य

(पाठ्यक्रम के सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–7
सत्रीय कार्य कोड : एमएचडी–7/टीएमए/20013-14
कुल अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 1000-1000 शब्दों में दीजिए। 15X3=45

1 समाज भाषाविज्ञान को परिभाषित करते हुए भाषा और समाज के पारस्परिक संबंधों की व्याख्या कीजिए।

2 वाक्य संरचना को स्पष्ट करते हुए विभिन्न वाक्यात्मक युक्तियों का उल्लेख कीजिए।

3 भाषा शिक्षण की दृष्टि से भाषा के विभिन्न प्रकारों को समझाइए।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500-500 शब्दों में लिखिए। 10X4=40

1 चोम्स्की के सिद्धांत को ध्यान में रखते हुए भाषा ओर व्याकरण की संकल्पना स्पष्ट कीजिए।

2 भारतीय भाषा चिंतन के आधार पर क्रिया की संकल्पना समझाइए।

3 अर्थ की प्रकृति से क्या तात्पर्य है? सोदाहरण समझाइए।

4 अनुवाद की प्रकृति, क्षेत्र और उपयोगिता पर प्रकाश डालिए।

(ग) निम्नलिखित पर लगभग 250-250 शब्दों में टिप्पणियाँ लिखिए। 5X3=15

1 ध्वनि परिवर्तन

2 शब्द के प्रकार

3 वैज्ञानिक और तकनीकी शब्द

एम.एच.डी.–13 : उपन्यास : स्वरूप और विकास

सत्रीय कार्य

(पूरे पाठ्यक्रम के सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.-13
सत्रीय कार्य कोड : एमएचडी–13/टीएमए/2013-14
कुल अंक : 100

नोटः निम्नलिखित सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. उपन्यास का अर्थ स्पष्ट करते हुए उपन्यास में यथार्थ की अभिव्यक्ति के विभिन्न रूपों का उल्लेख कीजिए। 15

2. उपन्यास में पात्रों के विकास पर सोदाहरण प्रकाश डालिए। 15

3. अन्य विधाओं से उपन्यास विधा की भाषा की भिन्नता स्पष्ट कीजिए। 15

4. भारतीय उपन्यास की अवधारणा का विवेचन कीजिए। 15

5. उपन्यास लेखन में प्रेमचंद के योगदान का उल्लेख कीजिए। 15

6. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणियां लिखिए : 5X5=25
   क) नवजागरण का हिन्दी संदर्भ
   ख) प्रकृतवाद और फ्रांसीसी उपन्यास
   ग) भारतीय उपन्यासों में ग्रामीण जीवन
   घ) रूसी उपन्यास और मक्सीम गोर्की
   ङ) उपन्यास और कहानी

एम. एच. डी.- 14
हिन्दी उपन्यास -1
(प्रेमचंद का विशेष अध्ययन)
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोडः एम एच डी -14
सत्रीय कार्य कोड : एम एच डी -14/टी एम ए/ 2013-2014
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 10×4=40

(क) मैं तो समझता हूँ, दान और उपकार के लिए इस से उत्तम और कोई अवसर न होगा। विवाह एक धार्मिक व्रत है, एक आत्मिक प्रतिज्ञा है। जब हम गृहस्थ-आश्रम में प्रवेश करते हैं, जब हमारे पैरों में धर्म की बेड़ी पड़ती है, जब हम सांसारिक कर्त्तव्य के सामने अपने सिर को झुका देते हैं, जब जीवन का भार और उनकी चिन्ताएं हमारे सिर पर पड़ती है; तो ऐसे पवित्र संस्कार पर हमको गाम्भीर्य से काम लेना चाहिए। यह कितनी निर्दयता है जिस समय हमारा आत्मीय युवक ऐसा कठिन व्रत धारण कर रहा हो, उस समय हम आनन्दोत्सव मानने बैठें। वह इस गुरुतर भार से दबा जाता हो और हम नाच-रंग में मस्त हों। मगर दुर्भाग्य से आजकल यही उलटी प्रथा चल पड़ी है, तो क्या आवश्यक है कि हम भी उसी लकीर पर चलें? शिक्षा का कम-से-कम इतना प्रभाव तो होना चाहिए कि धार्मिक विषयों में हम मूर्खों की प्रसन्नता को प्रधान न समझें।

(ख) अब मुझे किसी के सामने घुटने टेकने की जरूरत नहीं। इस दलाली की बदौलत मुझे अपनी आत्मा पर कितने आन्याय करने पड़ते, इसका मुझे कुछ थोड़ा अनुभव हो चुका है। मैं ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ कि उसने मुझे इस आत्म-पतन से बचा लिया। मेरा अपने समस्त भाइयों से निवेदन है कि वह एक महीने के अन्दर मेरे मुख्तार के पास जाकर अपने-अपने हिस्से का सरकारी लगान पूछ लें और वह रकम खजाने में जमा कर दें। मैं श्रद्धेय डॉक्टर इर्फानअली से प्रार्थना करता हूँ कि वह इस विषय में मेरी सहायता करें और जाब्ते और कानून की जटिल समस्याओं को तैयार करने की व्यवस्था करें। मुझे आशा है कि मेरे समस्त भ्रातृवर्ग आपस में प्रेम से रहेंगे और जरा-जरा -सी बातों के लिए अदालत की शरण न लेगें।

(ग) जब मैं प्राणिमात्र को स्वार्थ में लिप्त देखते-देखते संसार से घृणा करने लगी थी, तुम्हारी निःस्वार्थता ने मुझे अनुरक्त कर लिया। लेकिन काल-गति से एक ही पलटे ने तुम्हारा यथार्थ रूप प्रकट कर दिया। मेरा पता लगाने के लिए तुमने धर्माधर्म का विचार भी त्याग दिया। जो प्राणी अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए इतना अत्याचार कर सकता है, वह घोर-से-घोर कुकर्म भी कर सकता है। तुम अपने आदर्श से उसी समय पतित हुए, जब तमने उस विद्रोह को शांत करने के लिए शांत उपायों की अपेक्षा क्रूरता और दमन से काम लेना उचित समझा। शैतान ने पहली बार तुम पर वार किया और

तुम फिर न संभले, गिरते ही चले गए। ठोकरों-पर-ठोकरें खाते-खाते अब तुम्हारा इतना पतन हो गया है कि तुममें सज्जनता, विवेक और पुरुषार्थ का लेशांश भी शेष नहीं रहा। तुम्हें देखकर मेरा मस्तक आप-ही-आप झुक जाता था। मेरे प्रेम का आधार भक्ति थी वह आधार जड़ से हिल गया। तुमने मेरे जीवन का सर्वनाश कर दिया।

(घ) सरकारी गवाह क्यों बनाए जाते हैं, किस तरह प्रलोभन दिया जाता है, किस भांति वह पुलिस के पुतले बनकर अपने ही मित्रों का गला घोंटते हैं, यह उसे मालूम था। मगर कोई आदमी अपने बुरे आचरण पर लज्जित होकर भी सत्य का उद्घाटन करे, छल और कपट का आवरण हटा दे, तो वह सज्जन है, उसके साहस की जितनी प्रशंसा की जाए, कम है। मगर शर्त यही है कि वह अपनी गोष्ठी के साथ किए का फल भोगने को तैयार रहे। हंसता-खेलता फाँसी पर चढ़ जाए तो वह सच्चा वीर है, लेकिन अपने प्राणों की रक्षा के लिए स्वार्थ के नीच विचार से, दंड की कठोरता से भयभीत होकर अपने साथियों से दगा करे, आस्तीन का साँप बन जाए तो वह कायर है, पतित है, बेहया है। विश्वासघात डाकुओं और समाज के शत्रुओं में भी उतना ही हेय है जितना किसी अन्य क्षेत्र में। ऐसे प्राणी को समाज कभी क्षमा नहीं करता, कभी नहीं -जालपा इसे खूब समझती थी।

2. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए :** **12×4=48**

(क) प्रेमचंद के साहित्य संबंधी विचारों का विश्लेषण कीजिए।

(ख) "सेवा सदन" की सुमन की चारित्रिक विशिष्ठताओं पर सोदाहरण विचार कीजिए।

(ग) "रंगभूमि" में सूरदास के स्थान एवं महत्व का निर्धारण कीजिए।

(घ) "गबन" के के प्रमुख नारीपात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए।

3. **निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए :** **4×3=12**

(क) प्रेमचंद के उपन्यास

(ख) प्रेमशंकर का चरित्र

(ग) "गबन" में मध्यवर्ग

एम. एच. डी.- 15
हिन्दी उपन्यास -2
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोडः एम एच डी -15
सत्रीय कार्य कोड : एम एच डी -15/टी एम ए/ 2013-2014
कुल अंक : 100

1. **निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :** **10×4¬40**

(क) भई, जिसकी मैजोरिटी है, उसकी मिनिस्ट्री बनने दो। देखो तो वे कैसे सम्भालते हैं? गवर्नर को यह कहने का क्या हक़ है कि मिनिस्ट्री में कौन हो और कौन न हो! तुम हिन्दुस्तान को अब नहीं सम्भाल सकते तो दफा हो जाओ! तुमने बाँट कर जाने की जिम्मेवारी क्यों ले ली है। छोड़ो हिन्दुस्तानियों पर। उन्हें जैसे बाँटना होगा, खुद कर लेंगे। खिजर से इस्तीफा दिलाने की क्या जरूरत थी? यूनियनिस्ट मिनिस्ट्री नागरिक शांति की रक्षा नहीं कर पाती थी। तीन महीने से उससे कहीं बुरी हालत है, रोज बिगड़ रही है। रेलवे वर्कशाप में जो बम फेंके गए थे, मिलिटरी के ग्रिनेट थे। आज घर-घर बन्दूकें, राइफलें पहुँच गयी हैं। यह क्या हो रहा है! यह अमन है? यह सरकार इतनी पुलिस और फौज से अमन नहीं कायम कर सकती? यू.पी. में किदवई ने कैसे खाकसारों को ठण्डा कर दिया! यहाँ नहीं हो सकता!

(ख) बेटा, अगर तुझे नेक राह की जरूरत है तो तेरे सामने फ़कीरों-परहेज़गारों का रास्ता खुल पड़ा। जिसे यह खौफ़ है कि वह खुद तकलीफ़ न उठाए उसे भला दूसरों का नुकसान क्यों पसंद आएगा और अगर उसकी तबीयत में यह आदत नहीं है तो उसके मुल्क में अमन-चैन की बू भी नहीं है। अगर तू कानून-कायदे से मज़बूर है तो खुशी इख्तियार कर और अगर तन्हा है, पाक-साफ है तो अपना रास्ता ले। उस मुल्क में खुशहाली की उम्मीद न रख जिसमें बादशाह-रियाया एक-दूसरे से नाराज हैं। ख़्वाब में मुल्क को आबाद वही देखता है जो लोगों के दिल गुलजार रखता है। जुल्म से खराब - बदनामी होती है। जुल्म के ज़रिए रियाया को तबाह करना ठीक नहीं। इसलिए कि वही हकूमत को पनाह देने वाली है।

(ग) जमुना की जीवन-गाथा समाप्त हो चुकी थी और हम लोगों को उसके जीवन का ऐसा सुखद समाधान देखकर बहुत सन्तोष हुआ। ऐसा लगा कि जैसे सभी रसों की परिणति शान्त या निर्वेद में होती है, वैसे ही उस अभागिन के जीवन के सारे संघर्ष और पीड़ा की परिणति मातृत्व से प्लावित, शान्त, निष्कम्प दीपशिखा के समान प्रकाशमान, पवित्र, निष्कलंक वैधव्य में हुई।

(घ) डिनर के बाद कॉफी पीते हुए, छके हुए अफसरों का ठहाका दूसरी ही किस्म का होता है। वह ज्यादातर पेट की बड़ी ही अन्दरूनी गहराई से निकलता है। उस ठहाके के घनत्व का उनकी

साधारण हँसी के साथ वही अनुपात बैठता है जो उनकी आमदनी का उनकी तनख्वाह से होता है। राजनीतिज्ञों का ठहाका सिर्फ मुँह के खोखल से निकलता है और उसके दो ही आयाम होते हैं, उसमें प्रायः गहराई नहीं होती। व्यापारियों का ठहाका होता ही नहीं है और अगर होता भी है तो ऐसे सूक्ष्म और सांकेतिक रूप में, कि पता लग जाता है, ये इनकम-टैक्स के डर से अपने ठहाके का स्टॉक बाहर नहीं निकालना चाहते। इन नौजवानों ने जो ठहाका लगाया था, वह सबसे अलग था। यह शोहदों का ठहाका था, जो आदमी के गले से निकलता है, पर जान पड़ता है, मुर्गों, गीदड़ों और घोड़ों के गले से निकला है।

2. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए :** **12×4=48**

(क) महाकाव्यात्मक उपन्यास की आधारभूत विशेषाताएँ बताते हुए उसके आलोक में "झूठा सच" की समीक्षा कीजिए।

(ख) हिन्दी उपन्यास के विकासक्रम में "जिन्दगीनामा" का महत्व प्रतिपादित कीजिए।

(ग) "सूरज का सातवाँ घोड़ा" उपन्यास के आधार पर भारती की जीवन दृष्टि पर प्रकाश डालिए।

(घ) "राग दरबारी" के विशिष्ट पात्रों की विशेषताओं का सोदाहरण विविचन कीजिए।

3. **निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए :** **4×3=12**

(क) "झूठा सच" जनजीवन का अंकन

(ख) "जिन्दगी नामा की अंतर्वस्तु

(ग) "राग दरबारी" और स्वातंत्र्योत्तर भारत का यथार्थ

एम. एच. डी -16 : भारतीय उपन्यास
सत्रीय कार्य
(खंड 1, 2 ,3, और 4 पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड - एम. एच. डी -16
सत्रीय कार्य कोड - एम. एच. डी -16/टी एम ए/2013-14
कुल अंक - 100

कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सातवाँ प्रश्न अनिवार्य है। 15×4=60

1. "चेम्मीन" के कथानक का विश्लेषण कीजिए।

2. देश और काल के आधार पर "संस्कार" की समीक्षा कीजिए।

3. एक उपन्यास के रूप में "मानवीनी भवाई" की विशेषताएँ बताइए।

4. विरसा मुन्डा का चरित्र-चित्रण कीजिए।

5. "चेम्मीन" में आपको सबसे ज्यादा किस चरित्र ने प्रभावित किया और क्यों? विस्तृत चर्चा कीजिए।

6. चन्द्री की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए।

7. निम्नलिखित में से किन्हीं चार पर टिप्पणियाँ लिखिए : 10×4=40

   1. राजू का चरित्र
   2. प्राणेशाचार्य का चरित्र
   3. मुंडा समाज
   4. तकषि शिवशंकर पिल्लै
   5. महाश्वेता देवी